ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(6): 1236-1239
www.allresearchjournal.com
Received: 19-04-2017
Accepted: 21-05-2017

Vandana Kumari
Research Scholar
B.R.A. University,
Department of History
Muzaffarpur, Bihar, India

Corresponding Author:
Vandana Kumari
Research Scholar
B.R.A. University,
Department of History
Muzaffarpur, Bihar, India

चंपारण सत्याग्रह में गांधीजी की भूमिका का ऐतिहासिक विश्लेषण (मोतिहारी सबडिविजन के सन्दर्भ में)

Vandana Kumari

सारांश

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य चंपारण सत्याग्रह के त्रिस्तरीय आयामों की समीक्षा करना है। चंपारण सत्याग्रह के तीन स्तरीय (चंपारण, महात्मा गांधी, मोतिहारी) आयाम जिनके आधार पर बिहार राज्य से उपजा निलह कृषकों का आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता के ऐतिहासिक काल में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह समीक्षा चंपारण सत्याग्रह के संदर्भ में इतिहासकारों की समझ को नया दृष्टिकोण प्रदान करने में बेहद कारगर सिद्ध होगा। इस अध्ययन में मोतिहारी सबडिविजन के क्षेत्रीय प्रयासों तथा चंपारण सत्याग्रह के मुख्य नेता महात्मा गांधी के मध्य अंतर्संबंध को प्रदर्शित किया गया है। स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख आंदोलनों में चंपारण का सत्याग्रह आंदोलन, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की रीढ़ बनकर उभरा जिसका शुभारंभ गांधी जी के चंपारण आगमन की तिथि 15 अप्रैल 1917 को माना जा सकता है।

मूल शब्द: निलह कृषकों, नील खेती, मोतिहारी, चंपारण, सत्याग्रह, राजकुमार शुक्ल, गांधी

प्रस्तावना

चंपारण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रत्येक क्षेत्र में अत्यंत मजबूत तथा चिर स्मरणीय रही है इस पृष्ठभूमि को चंपारण सत्याग्रह, बेगूसराय गोलीकांड, बिहार किसान आंदोलन, बिहार मजदूर आंदोलन तथा बिहार क्रांति आंदोलन के स्वरूपों में देखा जा सकता है ब्रिटिश हुकूमत की क्रूर नीतियां, जनता का आर्थिक शोषण, जनता पर थोपे गए अवैध कर तथा नील की खेतीमें तीन कठिया व्यवस्था और कठोर आर्थिक दंडो से त्रस्त हो चुके चंपारण क्षेत्र की सहनशीलता की सभी सीमाएं समाप्त हो जाने के परिणाम स्वरूप उपजे क्रांतिकारी एवं जनता हितेषी इस सत्याग्रह ने ब्रिटिश सरकार को झुकने पर मजबूर कर दिया इसका परिणाम यह हुआ

की 135 वर्षों से चली आ रही नील की खेती धीरे-धीरे बंद हो गई और नील की खेती में जुटे किसानों का शोषण भी सदैव के लिए समाप्त हो गया। इस संपूर्ण संघर्ष ने एक नए राजनीतिक नेता महात्मा गांधी की छवि को भारत तथा ब्रिटिश हुकूमत के समक्ष खड़े होते हुए देखा ।

अध्ययन उद्देश्य

- चंपारण सत्याग्रह में गांधीजी जी की भूमिका की समीक्षा करना ।
- मोतिहारी सबडिविजन के क्षेत्रीय प्रयासों का चंपारण आंदोलन में योगदान की ऐतिहासिक समझ की समीक्षा करना ।

अध्ययन क्षेत्र

भारतीय स्वाधीनता संग्राम का प्रमुख केंद्र जिला चंपारण प्राचीन बिहार प्रांत का एक जिला था वर्तमान में यह पूर्वी चंपारण तथा पश्चिमी चंपारण नामक दो जिलों के नाम से पहचाना जाता है भारत तथा नेपाल की सीमा से सटे दोनों ही ऐतिहासिक क्षेत्र स्वाधीनता आंदोलन में काफी सक्रिय रहे हैं । बेतिया और मोतिहारी क्रमशः पश्चिमी तथा पूर्वी चंपारण क्षेत्र नील आंदोलन (चंपारण सत्याग्रह) के संदर्भ में भारतीय इतिहास के सबसे पुराने प्रतीक माने गए है ।

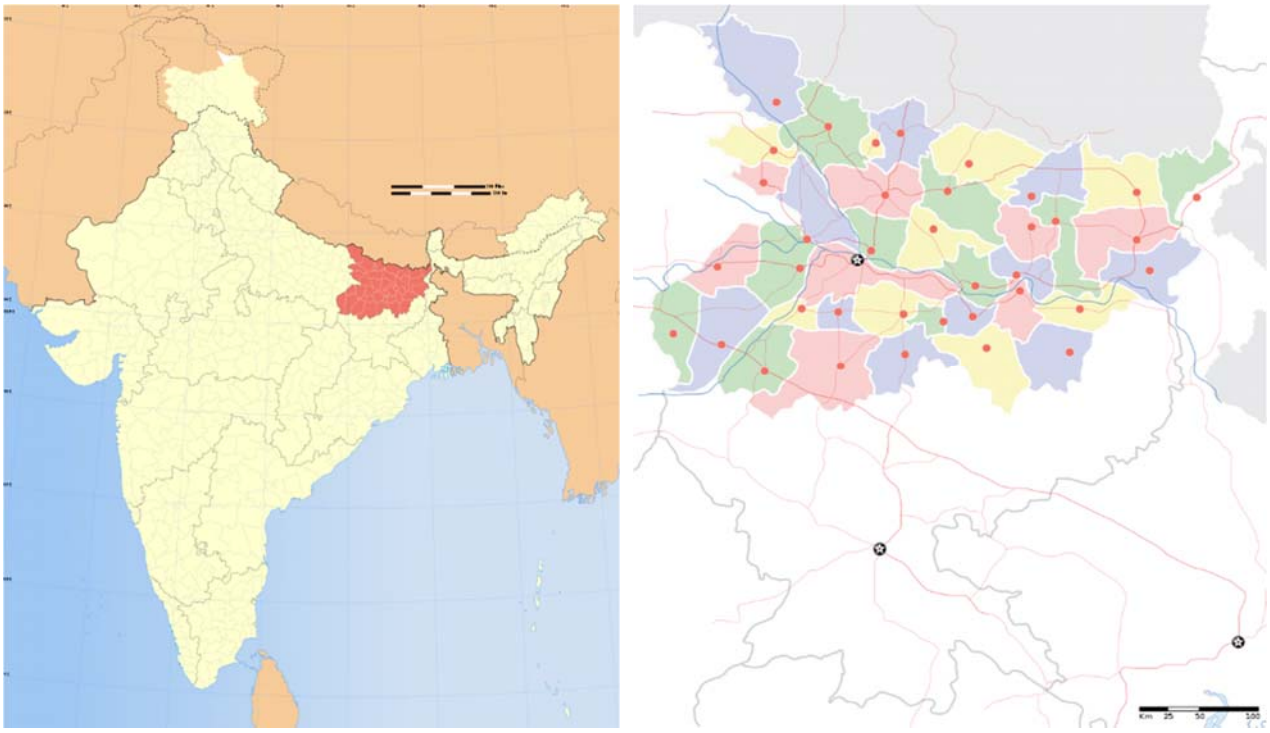

चित्र 1: भारत के नक़्शे मे चम्पारण

चंपारण सत्याग्रह की पृष्ठभूमि

वर्ष 1914 चंपारण के किसानों के लिए काफी अशुभ रहा। वजह यह थी कि औद्योगिक क्रांति के बाद नील की मांग बढ़ जाने के कारण ब्रिटिश सरकार ने भारतीय किसानों पर नील की खेती करने का दबाव डालना शुरू कर दिया। साल 1916 में लगभग 21,900 एकड़ जमीन पर आसामीवार, जिरात और तीनकठिया प्रथा लागू थी। चंपारण के रैयतों से मड़वन, फगुआही, दशहरी, सिंगराहट, घोड़ावन, लटियावन, दस्तूरी समेत लगभग 46 प्रकार के 'कर' वसूले जाते थे। और वह कर वसूली भी काफी बर्बर तरीके से की

जाती थी। निलहों के खिलाफ चंपारण के किसान राजकुमार शुक्ल की अगुवाई में चल रहे तीन वर्ष पुराने संघर्ष को 1917 में मोहनदास करमचंद गांधी ने व्यापक आंदोलन का रूप दिया।

दिसंबर 1916 में कांग्रेस द्वारा आयोजित लखनऊ अधिवेशन में महात्मा गांधी की सहभागिता सुनिश्चित हुई यही गांधी जी की मुलाकात एक ऐसे शख्स से हुई जिससे उनकी राजनीति की दिशा में एक नया परिवर्तन आ चुका था। यह शक्स अंग्रेजी हुकूमत के शोषित क्षेत्र का एक समृद्ध किसान था । राजकुमार शुक्ल ने नील की खेती में तीन कठिया व्यवस्था का पुरजोर विरोध किया इस हेतु वे लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक तथा पंडित मदन मोहन मालवीय जैसे दिग्गज नेताओं से किसानों के शोषण संबंधी समस्याओं जिक्र करते और चंपारण के निल्हो की दुर्दशा पर अंग्रेज विरोधी गतिविधियां संचालन की बात करते परंतु कांग्रेस मैं शामिल इन नेताओं का राजनीतिक उद्देश्य केवल राजनीतिक स्वतंत्रता था। शुक्ल जी इन नेताओं से बेहद असंतुष्ट होते दिखाई पड़ते थे ।

साधारण परंतु जिद्दी स्वभाव के राजकुमार शुक्ल द्वारा अपने इलाके के किसानों की पीड़ा और अंग्रेजों द्वारा उनके शोषण की दास्तान सुनाए जाने के पश्चात गांधी जी को इस नए राजनीतिक अध्याय के संदर्भ में सोचने को मजबूर कर दिया। [3]

गांधी जी द्वारा लिखित अपनी आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' के पांचवे भाग के बारहवें अध्याय में 'नील का दाग' नामक शीर्षक में गांधीजी लिखते हैं, "लखनऊ कांग्रेस में जाने से पहले तक मैं चंपारण का नाम तक ना जानता था, नील की खेती होती है इसका तो ख्याल भी ना के बराबर था जिसके कारण हजारों किसानों को कष्ट भोगना पड़ता है इसकी भी मुझे जानकारी ना थी"

लेकिन राज कुमार शुक्ल और उनकी जिद ने, गांधी जी को चंपारण आंदोलन में आने को मजबूर कर दिया था। कानपुर अहमदाबाद तथा कोलकाता प्रत्येक स्थान पर राज कुमार शुक्ल महात्मा गांधी के चंपारण आगमन हेतु आग्रह करते रहे जिनके भरसक प्रयासों ने महात्मा गांधी को चंपारण के किसानों की समस्याओं के विरुद्ध अपने जन आंदोलन की रूपरेखा तैयार करने हेतु प्रोत्साहित किया ।

मोतिहारी सबडिविजन के प्रयास और सत्याग्रह

राजकुमार शुक्ल के अनुरोध पर 15 अप्रैल, 1917 को महात्मा गांधी के मोतिहारी आगमन के साथ पूरे चंपारण में किसानों के भीतर आत्म विश्वास-जग चूका था । जहां उनका स्वागत मुजफ्फरपुर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जे बी कृपलानी और उनके छात्रों ने किया. मुजफ्फरपुर में ही गांधी जी से राजेंद्र प्रसाद की प्रथम मुलाकात भी हुई, परन्तु गांधीजी को धारा-144 के तहत सार्वजनिक शांति भंग करने के प्रयास की नोटिस भी भेजा गया। चंपारण के इस ऐतिहासिक संघर्ष में डॉ राजेंद्र प्रसाद, अनुग्रह नारायण सिंह, आचार्य कृपलानी समेत चंपारण के किसानों ने अहम भूमिका निभाई। आंदोलन के शुरुआती दो महीनों में गांधीजी ने इस क्षेत्र के हालात की गहराई से जांच की। चंपारण के लगभग 2,900 गांवों के लगभग 13,000 रैयतों की स्थिति दर्ज की गई। [1]

16 April 1917 को तिरहुत के कमिश्नर के निर्देश पर चंपारण के कलेक्टर द्वारा गांधी जी को जिला छोड़ने का आदेश दिया गया परंतु गांधी जी ने इसकी अवहेलना अथवा अवज्ञा करते हुए मोतिहारी सबडिविजन में अपना कदम रखा जिसका मुख्य उद्देश्य था- कृषकों की दुरावस्था की जांच करना तथा इनके शोषण के विरुद्ध सत्याग्रह करना । यहां चंपारण की आर्थिक दुर्दशा से आहत हुए गांधी जी ने कांग्रेस के राजनीतिक उद्देश्य की

भी आलोचना की उन्होंने कांग्रेस को राजनीतिक ध्येय से ऊपर उठकर ग्रामीण स्वराज तथा आर्थिक राष्ट्रवाद से ओतप्रोत बनाने का कार्य किया। [2]

एक महीने के अंदर जुलाई, 1917 में एक जांच कमेटी गठित की गईर् और 10 अगस्त को तीनकठिया प्रथा समाप्त कर दी गई।

18 अक्टूबर 1917 तक 'चंपारण एगरेरियन बिल' पर गवर्नरजनरल के हस्ताक्षर के साथ - तीनकठिया समेत कृषि संबंधी अन्य अवैध कानून भी, जो तब तक प्रचलन में थे, समाप्त हो गए। इस बड़ी घटना ने राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन का रास्ता प्रशस्त्र करने के साथ ही गांधी का कद और बड़ा कर दिया।[5]

तीन कठिया व्यवस्था/ नील की खेती के कृषकों की मुख्य समस्या

भारतीय पराधीनता शासनकाल में ब्रिटिश हुकूमत ने यह व्यवस्था कर रखी थी कि हर बीघे में 3 कट्ठा जमीन पर नील की खेती करना किसानों के लिए अनिवार्य है इससे किसानों को बेवजह की मेहनत के बदले में कुछ भी नहीं मिलता था साथ ही उन पर 42 तरह के अवैध कर डाल दिए जाते थे। जो भी इस अवैध व्यवस्था का विरोध करता अंग्रेज उसे कोड़े तथा प्रताड़ना का शिकार बनाते थे। [4]

निष्कर्ष

अतः निष्करतः कहा जा सकता है की सत्याग्रह आद्नोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का सिरमौर बना जिसके परिणामस्वरूप बिहार तथा भारत के अन्य राज्यों में भी क्रांतिकारी आंदोलनों की एक तीव्र श्रृंखला का विकास हुआ। जिसने ब्रिटिश हुकूमत की जड़ो को अंदर तक हिला दिया था। इस सम्पूर्ण संघर्ष में मोतिहारी सबडिविसन का अविस्मरणीय योगदान रहा। गाँधी जी के भरसक प्रयासों और मोतिहारी के आमजन से मिले समर्थन ने स्वाधीनता संग्राम में नयी रेखाएं खींच दी थी सम्पूर्ण भारत में यह आंदोलन काफी चर्चित रहा।

सन्दर्भ सूची

1. Binod Kumar Verma. Champaran Movement of and Pandit Raj Kumar Sukla. Proceedings of the Indian History Congress. 1917; 44(1983):388-391.
2. Bidyut Chakrabarty. Social and Political Thought of Mahatma Gandhi. Routledge Studies in Social and Political Thought, 2006, 30p.
3. Mittal SK, Krishan Dutt. Raj Kumar Sukul and the Peasant Upsurge in Champaran. Social Scientist. 1976; 4(9).
4. Anand RK, Singh RB. Indigo (Indigofera tinctoria): the historic plant of Indian freedom movement needs cultivation resurgence. Bioherald. Int. Jour. of Biodiversity & Environment. 2012; 2(1):15-18.
5. Dr. Rajendre Prasad. The Report fo the Champaran Agrarian Enquriy Committee. Satygrah in Champaran, Ocean books Pvt. Ltd Publishers. 2013, 154p.